डॉ॰ शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस॰आर॰ए॰पी॰ कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part- II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper — III

Date :- 22-02-2022

प्रेमचंद की कहानी कला

प्रेमचंद की कहानी कला को हम तीन अवस्थाओं में देख सकते हैं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ घटना बहुलता के कारण आकर्षक हैं। उनमें पात्र नहीं उभर पाये और कलेवर लंबा हो गया। आगे चलकर कहानियाँ अपेक्षाकृत छोटी हो गई तथा जीवन का मार्मिक अंश ग्रहण किया जाने लगा। तीसरी अवस्था में कथानक छोटा हो गया तथा व्यंग्य और प्रभाव की प्रधानता हो गई। उनकी काफी कहानियाँ घटना-बहुल हैं। कभी-कभी तो उपन्यास के बराबर की घटनाएँ कहानी में आ सिमटती हैं। उन कहानियों में संयोग और असाधारण रूप से सरलीकृत ढ़ग से हृदय परिवर्तन का आग्रह भी देखा जा सकता है। जैसे 'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी' आदि।

उनकी कहानियाँ विशाल चित्रपट को समेटे हुए हैं। उनमें किसान-जमींदार, अमीर-गरीब, ब्राह्मण-शूद्र, मजदूर-उद्योगपति, नौकर-मालिक, हिन्दू-मुस्लिम, आस्तिक-नास्तिक, स्त्री-पुरुष सभी के यथार्थ चित्र देखे जा सकते हैं।

प्रेमचंद उपन्यास को 'मानव चरित्र का चित्र मानते हैं, यह बात कहानी

Scanned by CamScanner

पर भी लागू होती है। प्रेमचंद ने अपने मानव पात्रों को परिस्थितियों और घटनाओं की टकराहट के बीच खड़ा कर उनके आन्तरिक रहस्यों को खोलना चाहा है। इसलिए उनकी सभी कहानियों तथा विशेषतः परवर्ती कहानियों में मनोवैज्ञानिक उद्घाटन हुआ है। उनके शब्दों में, "मेरी 'सुजान आगत', 'मुक्तिमार्ग', 'पंच परमेश्वर', 'शतरंज के खिलाड़ी' और 'महातीर्थ' नामक सभी कहानियों में एक न एक मनोवैज्ञानिक रहस्य को खोलने की चेष्टा की गई है।

Scanned by CamScanner